Ref-No. GGVS-2021/21/154

पशुओं में आफरा रोग एवं रोकथाम

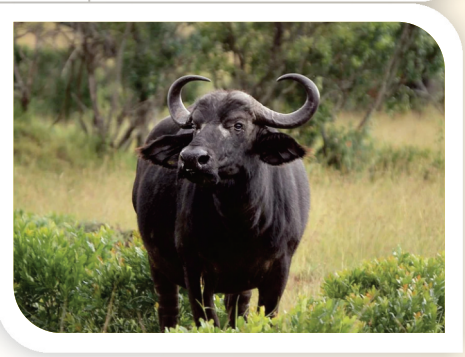

गोयल ग्रामीण विकास संस्थान

श्रीरामशान्ताय

जैविक कृषि अनुसंधान एवं प्रशिक्षण केन्द्र

राजस्थान जैविक प्रमाणीकरण संस्थान जयपुर द्वारा प्रमाणित

ग्राम जाखोड़ा, कैथून-सांगोद मार्ग, कोटा - 325001 (राजस्थान)

88759 95439 ggvs@goyalglobal.com www.ggvsglobal.com

पशुओं में आफरा रोग एवं रोकथाम

जुगाली करने वाले पशुओं में ज्यादा गीला हरा चारा खाने से उनके पेट में दूषित गैस जैसे कार्बन डाईऑक्साइड, मिथेन, हाइड्रोजन सल्फॉइड, नाइट्रोजन तथा अमोनिया आदि एकत्रित होकर पशु का बायां पेट गुब्बारे की तरह फूला कर तान देती हैं, ऐसी स्थिति में पशु बहुत बेचैन हो उठता हैं। इस प्रकार एकत्रित गैस से पशु के बांये पेट के फुलने को आफारा अथवा आफरा कहते हैं। आफरा रोग से पीड़ित पशु में अत्यधिक गैस बनने से फेफड़ों पर आवश्यकता से अधिक दबाव पड़ने के कारण श्वांस लेने में बड़ी कठिनाई हो जाती है और यदि इस रोग की सही समय पर चिकित्सा न करावें तो पशु मर भी सकता है।

रोग की अवस्था :

साधारणतया रोग की दो अवस्थायें होती है।

1. साधारण अवस्था : इस अवस्था में गैस कम बनती है और यह गैस पेट में उपस्थित भोजन पदार्थ में मिश्रित न होकर सिर्फ ऊपरी तल पर ही एकत्रित रहती है। इस अवस्था में पशुओं के मरने की संभावना बहुत कम होती है क्योंकि प्राथमिक चिकित्सा से इस रोग पर नियन्त्रण पाया जा सकता हैं।
2. तीव्र अवस्था : इस अवस्था में गैस पेट में उपस्थित भोजन पदार्थ में मिश्रित हो जाती हैं तथा यह तीव्र अवस्था अधिक खतरनाक एवं दर्दनाक होती हैं, जिससे पशु के मरने की संभावना बनी रहती हैं।

रोग के मुख्य कारण :

- पशु आहार में अचानक पूर्ण रूप से बदलाव जैसे सूखा चारा खिलाते–खिलाते अचानक पूर्ण रूप हरा चारा खिलाने से
- अल्प समय में अत्यधिक कार्बोहाइड्रेट अथवा प्रोटीन युक्त चारा–दाना जैसे मोठ, ग्वार, चना, चावल, बाजरा, जई आदि एक साथ अधिक मात्रा में खाने से
- सड़ा–गला या फफूंद लगा या घरों का बचा पुराना व बासी खाना खाने से
- वर्षा के दिनों में अधिक पानी युक्त हरा चारा आवश्यकता से अधिक खाने से
- कभी भी न पचने वाले पदार्थ जैसे चमड़ा, पोलीथीन की थैली, लोहा आदि खाने से
- बांयी और अमाश्य वाले हिस्से की तरफ पशु का लगातार व अधिक समय तक लेटे रहने से भी कभी–कभी यह रोग हो जाता है

- अन्य कारण जैसे पुराना एकत्रित पानी पीना, कब्ज, व्यायाम अथवा कार्य के बाद एकदम ठण्डे पानी को पिलाना, कुपोषण से अथवा अन्य किसी रोग से अधिक कमजोरी, पांचन शक्ति का कमजोर हो जाना आदि से भी कभी–कभी आफरा आ जाता हैं

आफरा रोग के मुख्य लक्षण :

- इस रोग में मुख्यतः पेट में गैस बनकर एकत्रित हो जाती है, जिसके फलस्वरूप बांया पेट फूल जाता है। यदि फूले हुए पेट पर अपनी अंगुलियों से हल्की–हल्की चोट मारें तो हमें ढोल जैसी आवाज सुनाइ देगी
- श्वांस में रूकावट के कारण पशु बहुत बैचेन हो जाता है और बैचेनी से बार–बार उठता बैठता है
- रोगी पशु के मुँह से झाग एवं लार निकलने लगती है तथा जीभ मुँह से बाहर निकल आती हैं
- फेफड़ों पर अधिक दबाव पड़ने के कारण रोगी पशु को श्वास लेने में कठिनाई होती हैं और इस वजह से पशु के नथूने फेल जाते है तथा पशु मुंह खोल कर श्वास लेने की कोशिश करता है
- रोग ग्रस्त पशु खाना–पीना तथा जुगाली करना बन्द कर देता है
- अन्त में पीड़ित पशु गिर कर लेट जाता है तथा गहरी व लम्बी श्वास लेने के साथ पैर पटकता है। यदि इस अवस्था में भी कोई चिकित्सा न की गई तो पशु की मृत्यु हो जाती है।

प्राथमिक चिकित्सा :

- शीघ्र ही बड़े पशुओं को 60 ग्राम तारपीन का तेल, 30 ग्राम हींग तथा 500 ग्राम अलसी का तेल तथा छोटे पशुओं जैसे भेड़, बकरी के लिए 10 से 12 ग्राम तारपीन का तेल, दो ग्राम हींग तथा 100 ग्राम मीठा तेल लेकर अच्छी तरह से मिला लेवें तथा उक्त मिश्रित द्रव्य को नाल द्वारा पिला देवें
- रोगी पशु को पकड़कर इधर–उधर चलायें, बायें पेट पर हल्के हाथ से मालिश करें और उसकी जीभ पकड़कर मुँह से बाहर खीचें जिससे गैस निकल जाती हैं
- अगर बाजार में पशुओं की दवा उपलब्ध हो तो ब्लोटोसिल या न्यूटेक्स या टिम्पोल आदि दवा 100 ग्राम की दर से गुड़ अथवा पानी के साथ बड़े रोगी पशुओं को देनी चाहिये। छोटे पशुओं को उक्त दवा 10 से 12 ग्राम की दर से गुड़ अथवा पानी के साथ देनी चाहिए

- आफरे की होम्योपेथिक दवा – कांबोवेज 200 प्रत्येक 6 गोली, कोल्चीकम 200 कुल 18 गोली, नवस बोमिका 200 एक बार में पानी के साथ 2–3 बार देवें।
- यदि तारपीन का तेल उपलब्ध न हो तो बड़े पशुओं को 30 ग्राम हींग, 50 ग्राम मीठा सोडा तथा 20 ग्राम सौंठ गुड़ अथवा पानी के साथ पशु को देना भी लाभकारी होता है तथा छोटे पशुओं को दो ग्राम हींग, 5 ग्राम मीठा सोडा तथा दो ग्राम सौंठ गुड़ अथवा पानी के साथ पशु को देना भी लाभकारी होता हैं।
- यदि संभव हो तो पशु के एनिमा भी लगवा सकते हैं, जिससे गोबर बाहर आ जायेगा और आराम मिल जायेगा
- फेफडों पर गैस का दबाव कम करने के लिये रोगी पशु को ढलान वाले स्थान पर इस प्रकार बांधकर खड़ा करें जिससे उसकी धड़ कुछ ऊंची रहे।

पशुपालक भाईयो के लिए ध्यान रखने योग्य बातें :

- हरे चारे के साथ हमेशा सूखा चारा 25 प्रतिशत मिलाकर पशुओं को खिलावें
- चारा व दाने में अचानक बदलाव न लावें
- सड़ा गला या फंफूद लगा आहार न खिलावें
- नियमित रूप से पाचक चूर्ण को गुड़ के साथ अपने पशुओं को खिलावें
- पशु आहार मे हमेशा खनिज लवण मिश्रण का उपयोग करें
- मुँह से दवा पिलाते समय पशु की जीभ कभी भी न पकड़े अन्यथा दवा फेफड़ों में जा सकती हैं
- आफरा के रोगी पशुओं को केरोसिन सुंघाना अच्छा नही हैं
- जादू टोने पर निर्भर न रहे